1 A	मलखंब — मप्र राज्य का राजकीय खेल जिसे 9 अप्रैल 2013 में घोषित किया गया
	→ योगेश मालवीय - प्रमुख मलखंब कोच हैं, जिन्होंने द्रोणाचार्य पुरस्कार जीता है।
	→ उज्जैन में मलखंब फेडरेशन स्थापित है
1 B	→ छत्तीसगढ़ को मप्र राज्य के 7 जिले स्पर्श करते हैं → सीधी, सिंगरौली, शहडोल, अनूपपुर डिंडोरी, मंडला तथा बालाघाट
1 C	→ अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त गोंड कलाकार → मप्र के डिंडोरी जिले से संबंधित → इनके सम्मान में मप्र सरकार ने 2007 में "जंगल सम्मान" स्थापित किया।
1 D	→ मप्र में अनुसूचित जाति के लिए 4 लोकसभा सीटें आरक्षित की गई हैं - ① भिण्ड ② टीकमगढ़ ③ देवास ④ उज्जैन
1 E	→ मप्र सोसायटी पंजीकरण अधि. के तहत पंजीकृत सार्वजनिक निकाय → 2007 में स्थापना

KAUTILYA ACADEMY

Scanned with CamScanner

1 F	→ मप्र के दक्षिण पूर्व में स्थित धारवाड़ चट्टानों का भाग है।
	→ बालाघाट, नवलपुर, छिंदवाड़ा जिलों में अवस्थित
	→ क्वार्टजाइट, ग्रीन स्टोन तथा मैंगनीज के निक्षेप।
1 G	→ मप्र के दक्षिणोत्तर में विंध्याचल पर्वत श्रेणी से उद्गम
	→ कर्क रेखा को दो बार काटती है।
	→ म.प्र., राजस्थान, गुजरात में बहती हुई खंभात की खाड़ी में गिरती है।
1 H	→ मप्र, राजस्थान, उत्तर प्रदेश में चंबल नदी के क्षेत्र में विस्तृत
	→ मप्र का सबसे बड़ा घड़ियाल अभ्यारण्य है।
	→ स्थापना - 1979 में
1 I	→ आपातकाल के दौरान (1975-77) पीड़ित व्यक्तियों को सहायता हेतु स्थापित की गई थी।
	→ वर्तमान में मप्र सरकार द्वारा इसके प्रतिस्थापन करके मप्र लोकतंत्र सेनानी सम्मान कानून 2018 लाया गया है।

Scanned with CamScanner

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार..

1 J

→ 24वें तीर्थंकर जैन महावीर के अहिंसा "सिद्धांत के तहत समाज में उल्लेखनीय कार्य करने वाले व्यक्ति या संस्था को दिया जाने वाला सम्मान

→ म.प्र. सरकार द्वारा स्थापित यह अंतर्रा. सम्मान है।

1 K

→ म.प्र. के बुंदेलखंड अंचल का प्रसिद्ध लोकगीत
→ बिना किसी वाद्य यंत्र के गायन
→ बंबुलिया या लमटेरा भी कहते हैं।

1 L

→ 1857 ई. की स्वतंत्रता लड़ाई में प्रमुख महिला वीरांगना क्रांतिकारी विद्रोही।
→ ~~रामगढ़ रियासत की "हड़प नीति" के विर~~
अंग्रेजों की हड़प नीति का विरोध किया

1 M

→ प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता
→ म.प्र. सरकार ने ठक्कर बापा पुरस्कार स्थापित किया है।
→ हरिजन सेवक संघ "तथा गोपालकृष्ण गोखले के संस्था के साथ कार्य किया।

1 N

→ म.प्र. व महाराष्ट्र राज्य की संयुक्त सिंचाई परियोजना है।
→ महाराष्ट्र के सिरपुर में बाघ नदी पर स्थित

KAUTILYA ACADEMY INDORE

Scanned with CamScanner

→ म.प्र. का बड़वानी जिला लाभान्वित है।

10 → मप्र के निमाड़ क्षेत्र का प्रसिद्ध धार्मिक नृत्य

→ चैत्रमास में गणगौर पर्व के अवसर पर आयोजन।

→ ढोल और थाली के थाप पर

→ 2 प्रमुख शैलियाँ झोला व झालरिया

KAUTILYA ACADEMY
INDORE

Scanned with CamScanner

2 A

'बुंदेलखंड केसरी' के नाम से विख्यात राजा छत्रसाल शक्तिशाली बुंदेलखंड के संस्थापक थे। इनका जन्म टीकमगढ़ में हुआ। राजा छत्रसाल बुंदेला राजा चम्पतराय के पुत्र थे जिन्होंने राज्य की रक्षा करते हुये प्राण गँवा दिये।

पिता की मृत्यु के बाद राजा छत्रसाल ने अपने पिता के मित्र राजा जयसिंह से आधुनिक सैन्य प्रशिक्षण प्राप्त किया। उस समय जयसिंह औरंगजेब के दक्षिण अभियान में कार्यरत थे तभी राजा छत्रसाल को बीजापुर के युद्ध (1665) में अपने सैन्य कुशलता को प्रदर्शित करने का अवसर मिला। परंतु विजय का श्रेय मुगलों ने अपने नाम ही सीमित रखा। इसी दौरान राजा छत्रसाल की मुलाकात दक्षिण में 'शिवाजी' से हुई जिन्होंने राजा छत्रसाल को बुंदेलखंड पुनः जीतने का हौसला दिया और राजा छत्रसाल ने शिवाजी से प्रेरणा लेकर मुगलों की सत्ता के खिलाफ लड़कर बुंदेलखण्ड राज्य को सशक्त बनाया। इसके पश्चात छत्रसाल ने महाराजा की पदवी धारण की।

उत यमुना, उत नर्मदा, उत चंबल, उत टोंस।
छत्रसाल सों लरन की, रही न काहू हौंस॥

प्रतापी राजा छत्रसाल के बारे में उपर्युक्त पंक्तियाँ सही बैठती हैं।

Scanned with CamScanner

राजा छत्रसाल साहित्य प्रेमी व इसके संरक्षक थे अपने दरबार में भूषण जैसे प्रसिद्ध कवि को संरक्षण दिया। 1676 में पन्ना को बुंदेलखण्ड राज्य की राजधानी बनाया।

राजा छत्रसाल ने मराठो से मित्रता की मिसाल प्रस्तुत की और बाजीराव प्रथम की सहायता प्राप्त कर अपनी पुत्री मस्तानी का विवाह बाजीराव I से किया।

मध्य युग में राजा छत्रसाल वीरता के प्रतीक बने तथा म.प्र के आधुनिक जिले छतरपुर का नाम राजा छत्रसाल की नगरी के कारण पड़ा।

Scanned with CamScanner

2 B

म.प्र. की विविध सामाजिक सांस्कृतिक भिन्नता एवं जनजातीय बहुलता ने विभिन्न बोलियों को जन्म दिया है।

बुंदेली, बघेली, निमाड़ी, मालवी ब्रज, भीली इत्यादि म.प्र. की बोलियाँ हैं।

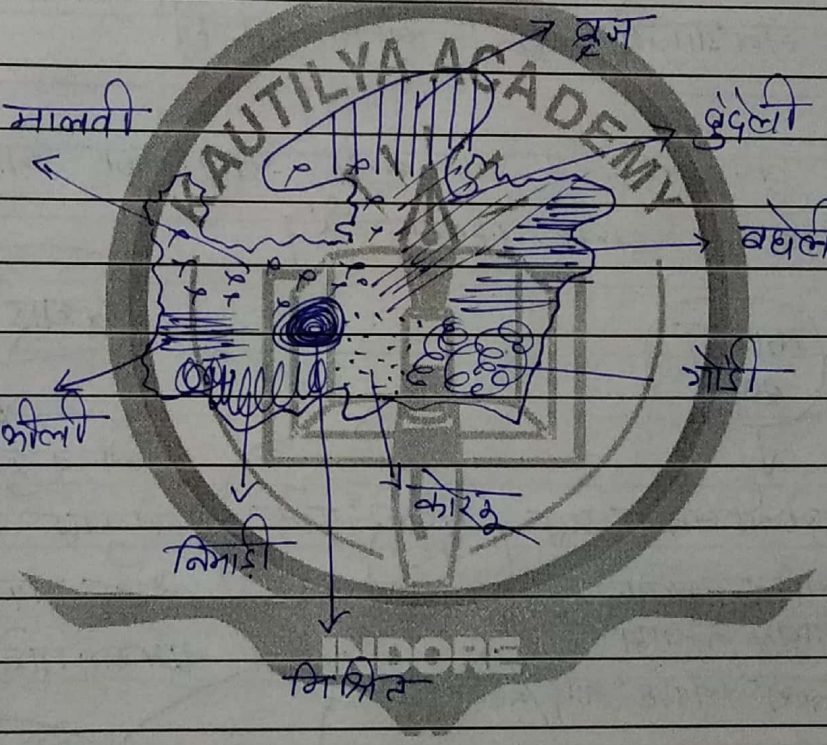

① बुंदेली → शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित है।
→ ईसुरी प्रसिद्ध बुंदेली कवि थे।

② बघेली → पूर्वी हिंदी के अर्द्धमागधी अपभ्रंश से विकसित हुई।

③ निमाड़ी → शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित
→ संत सिंगाजी प्रसिद्ध साहित्यकार हैं।

Scanned with CamScanner

(4) मालवी → राजस्थानी हिन्दी की शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित है।

(5) ब्रज → पश्चिमी हिंदी की प्रधान बोली है।

(6) भीली, कोरकू, गोंडी → ये बोलियाँ क्रमशः भील, कोरकू व गोंड जनजातियों द्वारा बोली जाती है।

2 c

बुंदेलखंड के लोकनृत्य मप्र. की लोककला विरासत का अहम हिस्सा है।

बुंदेलखंड के लोकनृत्य

- **कानड़ा नृत्य**
  - → धोबी समाज द्वारा
  - → भक्ति आधारित गायन के साथ जन्म विवाह आदि अवसर पर
- **बधाई नृत्य**
  - → स्त्री व पुरुषों द्वारा संयुक्त रूप से शुभ अवसरों में शुभकामनाओं हेतु
- **सैरा**
  - → पुरुष प्रधान नृत्य
  - → डंडा लेकर कृष्ण लीलाओं का प्रदर्शन
  - → फसल बुवाई व तीज के अवसर पर
- **राई**
  - → बुंदेलखण्ड का प्रसिद्ध नृत्य
  - → "दामोदर नृत्य" भी कहलाता है
- **दिमराई**
  - → ढीमर जाति द्वारा
  - → कत्थक के समान परिचालन

Scanned with CamScanner

कानड़ा, राई, बधाई, ढिमराई सैरा आदि के अलावा मवासा एवं नौटंकी भी बुंदेलखण्ड के लोकनृत्य कला को समृद्ध करते हैं।

2 D

म.प्र. में प्रागैतिहासिक काल से लेकर आधुनिक काल तक की गुफाओं के अवशेष विद्यमान हैं।

इनमें सबसे प्राचीनतम भीमबेटका की गुफाऐं हैं (रायसेन) जिन्हें 2003 में यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल किया गया था।

प्रमुख गुफायें

भीमबेटका की गुफायें
- आदिमानव द्वारा निर्मित शैलचित्रों के लिये प्रसिद्ध (पूर्वपाषाण कालीन)

भर्तृहरि की गुफायें
- उज्जैन में अवस्थित
- 11वीं सदी में परमार राजाओं द्वारा निर्माण
- रंगीन चित्रों के लिये प्रसिद्ध

उदयगिरि की गुफायें
- विदिशा; 5वीं सदी में निर्मित
- हिंदू तथा जैन धर्म से संबंध

बाघ की गुफायें
- धार; बाघ नदी तट पर
- बौद्ध धर्म से संबंधित
- अजंता के समकक्ष हैं।

Scanned with CamScanner

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

उपर्युक्त के अलावा आदमगढ़ गुफाये (होशंगाबाद) पांडव की गुफाये (महाभारत काल), बिलौवा की गुफाये (ग्वालियर), लिखी छात की गुफाये, चंदेरी आदि अन्य गुफाये प्रसिद्ध है।

2 E

कोरकू जनजाति मप्र मे मुख्य रूप से सतपुड़ा पर्वत क्षेत्रो मे निवास करती है।

कोरकू मूलतः मुण्डा/कोलारियन जनजाति की एक शाखा है। ये राजपूतो को अपना पूर्वज मानती है।

मुख्य विशेषताये –

① सामाजिक स्थिति →

→ पितृसत्तात्मक
→ संयुक्त परिवार प्रणाली
→ समगोत्र विवाह वर्जित
→ समाज 2 वर्गो मे विभाजित है।
① भूस्वामी (उच्च वर्ग)
② पोथरिया (निम्न वर्ग

② सांस्कृतिक स्थिति →

गुड़ी पड़वा, दशहरा, दीपावली, होली, पाली आदि त्यौहारो का आयोजन

Scanned with CamScanner

③ धर्म → हिंदू देवी देवताओं की आराधना
→ प्रमुख देव – डोंगर देव, भडुआ देव
→ बलि प्रथा प्रचलित है
→ मृतकों को दफनाकर स्तम्भ निर्माण की प्रथा जिसे "सिडोली" प्रथा भी कहते हैं।
– प्रचलित है

④ आर्थिक जीवन → कृषि, पशुपालन, शिकार इत्यादि आजीविका के साधन हैं।

कोरकू आदिवासी समुदाय की प्रमुख उपजातियाँ निम्नलिखित है –
बोवई, बवारी, पठारिया आदि

2 f

मप्र में मैंगनीज धारवाड़ क्रम की चट्टानों मे ऑक्साइड के रूप मे पाया जाता है।
म०प्र० मे देश के कुल मैंगनीज का 33% उत्पादन होता है। साथ ही यहाँ देश का 13% मैंगनीज भण्डार है।

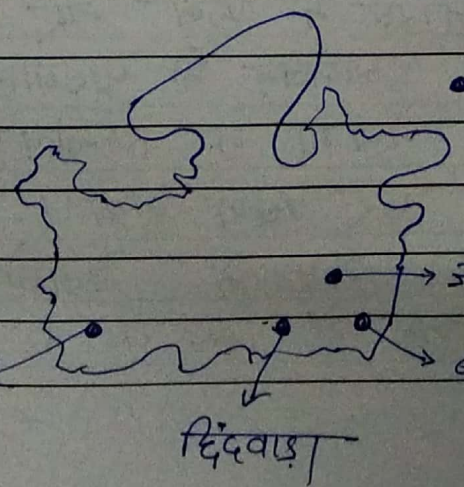

• मैंगनीज उत्पादक जिले

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

उत्पादक क्षेत्र –

① छिंदवाड़ा → गोदावरी एवं वर्धा घाटियों से

② आबुआ → बंदीवार, डोंगरी, कजिली इत्यादि क्षेत्र से

③ जबलपुर –

④ बालाघाट → एशिया की सबसे बड़ी मैंगनीज खदान भरवेली में स्थित है। यहाँ लांगुर, सीतापठार, चिकमारा आदि मैंगनीज उत्पादक क्षेत्र है।

2 H

अगस्त 1942 में मुंबई के ग्वालिया टैंक में अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के अधिवेशन में "अंग्रेजो भारत छोड़ो" का प्रस्ताव पारित किया गया। उसके बाद महात्मा गाँधी के करो या मरो के नारा से भारत छोड़ो आंदोलन की लहर सम्पूर्ण भारत में फैल गई।

आंदोलन की शुरुआत होते ही सभी महत्वपूर्ण नेताओं को तहसील स्तर पर भी गिरफ्तार कर लिया गया।

म.प्र. के नेताओं ने भी भारत छोड़ो आंदोलन में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया।

Scanned with CamScanner

मप्र. के जो नेता अधिवेशन में भाग लेने गये थे उन्हें भी लौटते समय "ऑपरेशन जीरो ऑवर" के तहत गिरफ्तार कर लिया गया। इसी तरह सभी नेताओं की गिरफ्तारी से जनता के युवा वर्ग के हाथों में आंदोलन की बागडोर आ गई तथा कई स्थानों में आंदोलन ने हिंसक रूप धारण कर लिया।

मप्र. में कई स्थानों पर महत्वपूर्ण स्थानीय नेताओं का उदय हुआ।

स्थान	नेतृत्व
i) सागर	सबुलाल जैन
i) मंडला	उदयचंद जैन
i) जबलपुर	गुलाबसिंह
i) नरसिंहपुर	मंसाराम और गौराबाई
i) बैतूल	महादेव तेली
i) इंदौर	भगनलाल ओसवाल
i) भोपाल	भोपाल प्रजामंडल
i) ग्वालियर	हरगोविंद शर्मा

इनके अलावा रीवा में छात्रों ने आंदोलन की बागडोर संभाली। हालाँकि सभी जगहों पर सरकार ने पुलिस बल की मदद से आंदोलन का बलपूर्वक दमन किया बावजूद इसके मप्र. की भारत छोड़ो आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका रही।

2 I

सुभद्रा कुमारी चौहान —

आधुनिक हिन्दी साहित्य में सुभद्रा कुमारी चौहान का महत्वपूर्ण योगदान है। इनका जन्म इलाहाबाद में 1904 में हुआ तथा शिक्षा दीक्षा प्रयाग में ही सम्पन्न हुई।

विवाह के पश्चात् खण्डवा निवास स्थान बना जहाँ प्रसिद्ध क्रांतिकारी व कवि श्री माखन लाल चतुर्वेदी का सानिध्य प्राप्त हुआ।

पति श्री लक्ष्मण सिंह के साथ स्वतंत्रता आंदोलन में जोर शोर से भाग लिया कई बार जेल भी गई। म.प्र. विधानसभा की सदस्य भी रह चुकी है।

अपनी ओजस्वी रचनाओं के माध्यम से स्वतंत्रता आंदोलन को स्फूर्त किया तथा पारिवारिक जीवन की सूक्ष्म अभिव्यक्तियों को अपनी कविताओं के माध्यम से प्रकट किया।

विभिन्न रचनायें – "झाँसी की रानी", वीरों का कैसा हो वसंत, बिखरे मोती आदि।

ओजस्वी कवियित्री, प्रेरणादायी लेखिका, क्रांतिकारी महिला, के रूप में सुभद्रा कुमारी चौहान को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है।

Scanned with CamScanner

2 7

मध्यप्रदेश में भित्ति चित्रकला के अनेक रूप प्रचलित है।

क्षेत्रीय विविधता के आधार पर भित्ति चित्रकला —

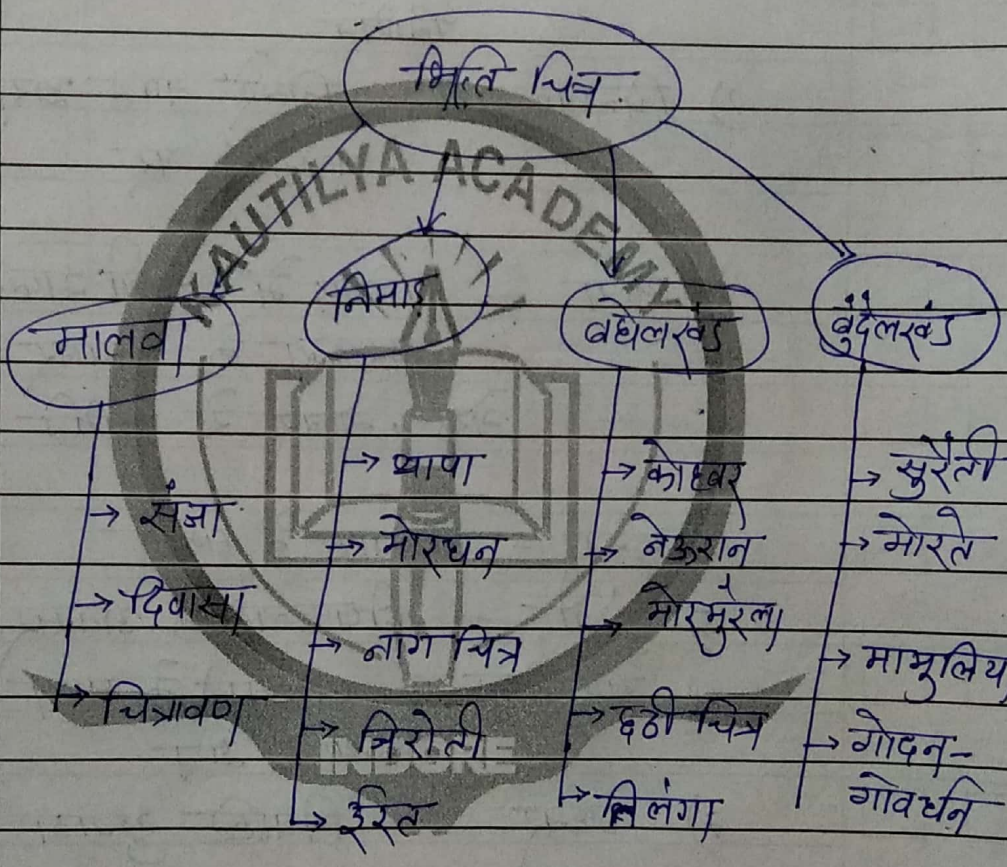

कुछ भित्तिचित्र जैसे नागचित्र, सुरैती, कोहबर आदि सम्पूर्ण मप्र में प्रसंगिक है। ये भित्तिचित्र म.प्र. की लोक कला का अभिन्न हिस्सा है।

KAUTILYA ACADEMY

Scanned with CamScanner

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार..

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भित्तिचित्र की विशेषतायें –

1) संजा – किशोरियों द्वारा श्राद्ध पक्ष में दीवार पर प्राकृतिक पदार्थों से निर्मित

2) चित्रावण – चितरे जाति द्वारा विवाह समारोहों पर

3) थापा – निमाड़ में सेली सप्तमी या दशहरा के अवसर पर हल्दी गेरू, गोबर से निर्मित

4) ईरत – विवाह के समय

5) सुरेती – दीपावली के अवसर पर

6) मामुलिया – नवरात्रि के समय अविवाहित कन्याओं द्वारा

7) कोहबर – विवाहित युगल द्वारा पूजन

8) छठी चित्र – शिशु के जन्म के 6वें दिन.

भित्ति चित्र, दीवारों पर उकेरे जाते हैं ये लोकसंस्कृति के सौंदर्य, धार्मिक आस्था तथा प्रेम का प्रतीक माने जाते हैं।

Scanned with CamScanner

3 A

म.प्र. में पर्यटन के विभिन्न स्वरूप विधमान है। स्थानीय पर्यटन स्थलों के साथ-साथ यहाँ विश्व विरासत स्थल म.प्र. को पर्यटन की दृष्टि से समृद्ध करते हैं।

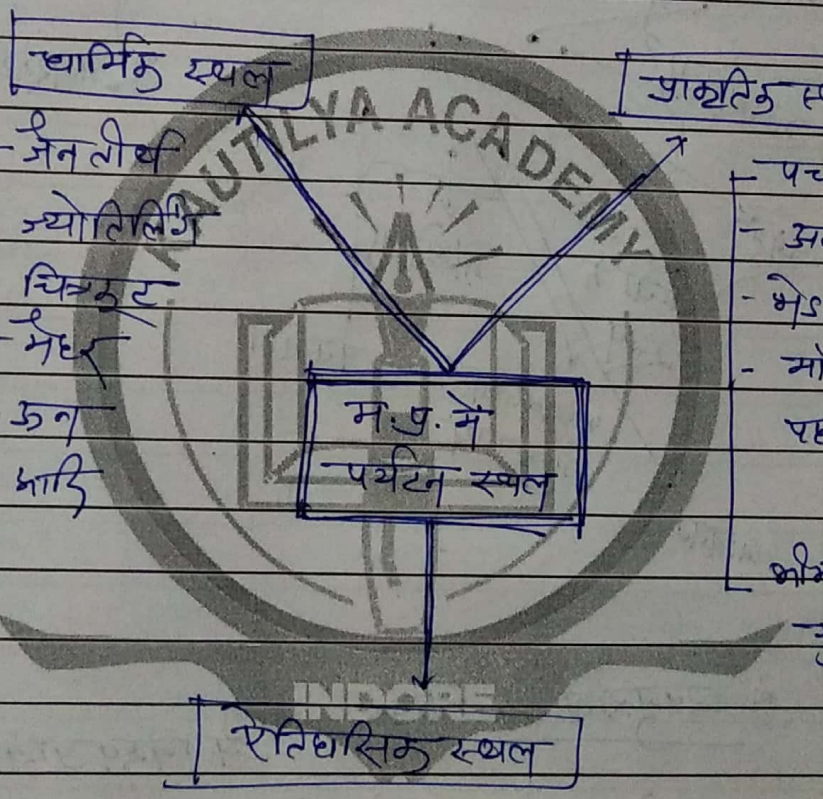

Scanned with CamScanner

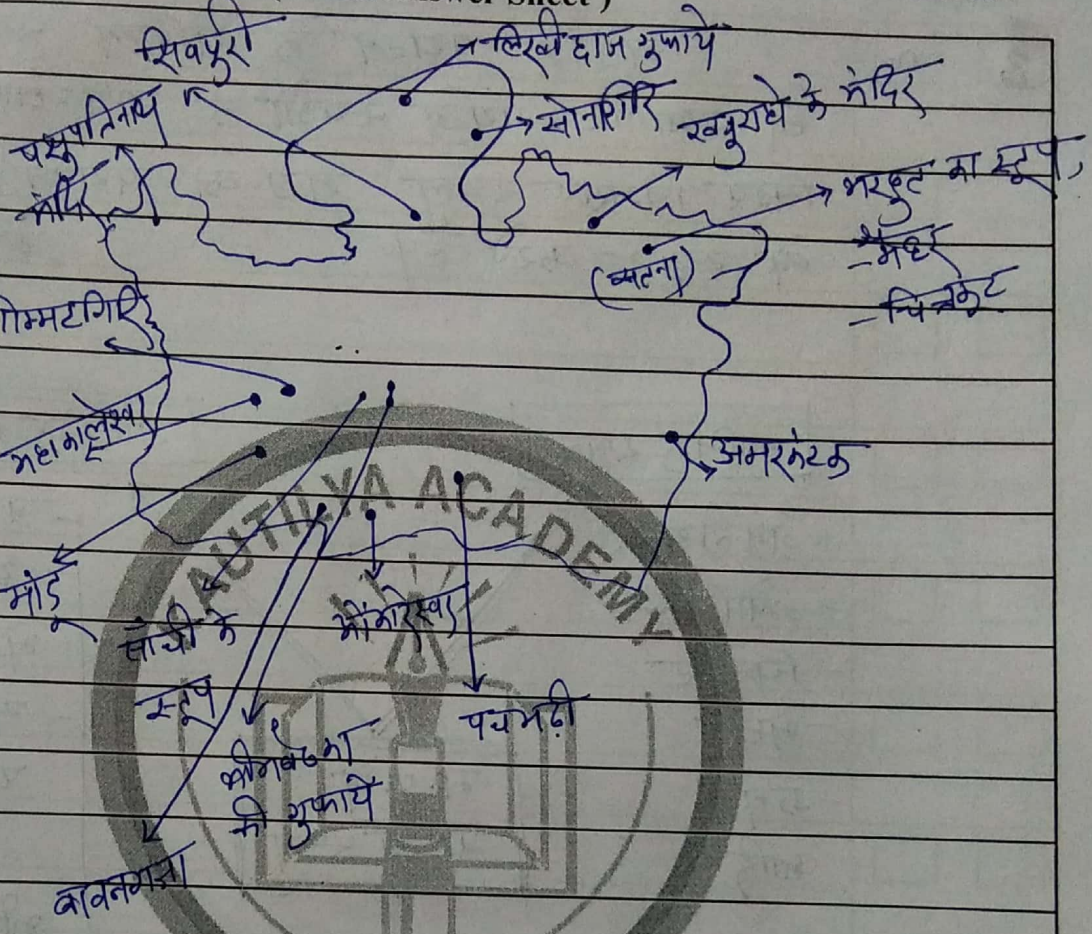

1) खजुराहो के मंदिर → ये विश्व प्रसिद्ध मंदिर म.प्र. के छतरपुर जिले में स्थित खजुराहो में ~~निर्मित~~ ~~स्थापित~~ किये गये 11 वीं शताब्दी से संबंधित है।
→ चंदेल शासको द्वारा निर्मित
→ इन्हे तीन समूहों में विभाजित किया गया है। पश्चिमी समूह के प्रसिद्ध मंदिर है → कंदरिया महादेव, चौंसठ योगिनी, मतंगेश्वर, विश्वनाथ इत्यादि।

Scanned with CamScanner

प्रत्येक समूह के मंदिरो की अपनी अलग-अलग विशेषतायें है।

खजुराहो के मंदिर भारतीय स्थापत्य एव शिल्पकला के उत्कृष्ट उदाहरण है।

•) साँची के स्तूप →

रायसेन जिले मे अवस्थित
निर्माण – 3rd शताब्दी में अशोक ने
खोज – 1818 ई. में जनरल टेलर ने
प्रसिद्धि – यूनेस्को द्वारा 1989 में विश्व विरासत स्थल घोषित

•) मांडू →

धार जिले मे नर्मदा किनारे स्थित
मांडू विंध्याचल श्रेणी में मांडवगढ़ और शादियाबाद के नाम से विख्यात

→ ऐतिहासिक व प्राकृतिक विरासत स्थल

→ प्रतीक → रानी रूपमती व राजा बाज बहादुर की अमर प्रेम गाथा का

प्रमुख स्थल → अशरफी महल, हिंडोला महल, जहाज महल, दिल्ली दरवाजा हाथी महल इत्यादि

Scanned with CamScanner

मांडू को सिटी ऑफ जॉय तथा महलों की नगरी के नाम से जाना जाता है।

•) भीमबेठिका की गुफायें –
रायसेन जिले में स्थित
→ आदिमानव द्वारा निर्मित बने शैलचित्रों के लिए प्रसिद्ध प्रागैतिहासिक गुफायें
→ यूनेस्को द्वारा 2003 में विश्व विरासत स्थल घोषित
→ खोज – स्व. डॉ. विष्णुधर वाकणकर

•) ओंकारेश्वर तथा महाकालेश्वर →
ये दोनों क्रमशः खण्डवा तथा उज्जैन में स्थित भारत के प्रसिद्ध 12 ज्योतिर्लिंगों में से 2 ज्योतिर्लिंग है।

•) बावनगजा → बड़वानी जिले में स्थित प्रसिद्ध जैन तीर्थ स्थल है।
→ यहाँ प्रति 12 वर्ष में महामस्तकाभिषेक का आयोजन होता है।

अन्य जैन तीर्थ स्थल – मुक्तागिरि, सोनागिरि, कुण्डलपुर, पुष्पागिरि, गोम्मटगिरि

Scanned with CamScanner

म.प्र. में अवस्थित पर्यटनों की यदि गणना मात्र की जाये तो यह 300 से अधिक है जिनमें से 20 पर्यटन केन्द्र अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त है।

पर्यटन क्षेत्र आर्थिक विकास में सहायक होते है। इसलिये म.प्र. सरकार को चाहिए कि वह इनके संरक्षण एवं संवर्धन पर पर्याप्त ध्यान देकर सुविधाओं से युक्त करे, ताकि इनके जरिये से राज्य की आय बढ़ने के साथ-साथ स्थानीय स्तर पर रोजगार की उपलब्धता प्राप्त हो।

KAUTILYA ACADEMY INDORE

Scanned with CamScanner

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

3 D

मध्यप्रदेश के विभिन्न अंचलों में आदिवासी एवं ग्रामीण जनसंख्या का बाहुल्य होने के कारण विभिन्न तरह के शिल्प कलाओं की उत्पत्ति हुई है।

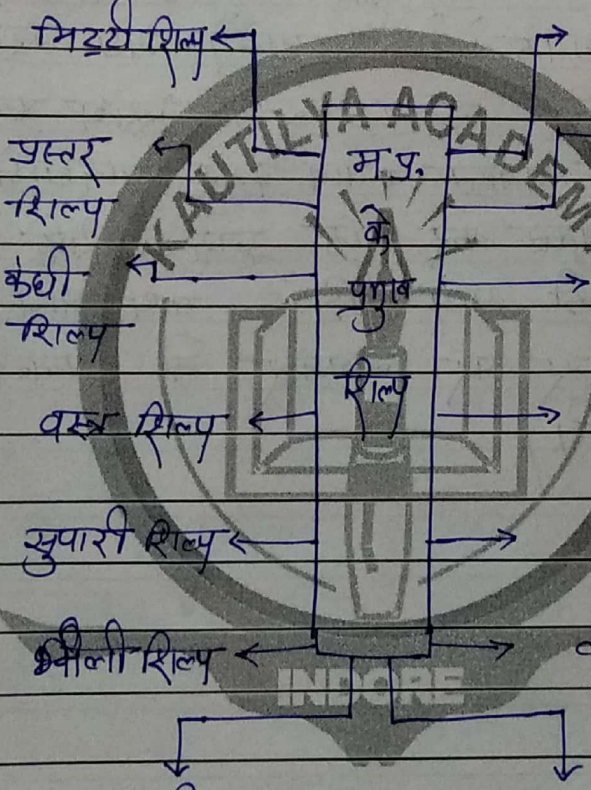

मिट्टी शिल्प –

धार, झाबुआ, सीधी, शहडोल, बैतूल, मंडला आदि क्षेत्रों में

:- टेराकोटा → पकी मिट्टी से निर्मित शिल्प

→ गोंड तथा बैगा जनजाति द्वारा

Scanned with CamScanner

प्रश्न संख्या

मुख्य परीक्षा उत्तर पुस्तिका
(Mains Answer Sheet)

भारत का नं. 1 संस्थान
कौटिल्य एकेडमी
सफलता का प्रवेश द्वार...

टेराकोटा शिल्प (मिट्टी) खिलौने तथा सजावटी सामान बनाये जाते हैं।

धातु शिल्प —
→ बर्तन, आभूषण, देवी-देव प्रतिमाओं का निर्माण (टीकमगढ़, बैतूल)
→ पीतल व ताँबे की कलात्मक वस्तुएं (रीवा व नरसिंहपुर)
→ "काँसे की बटलोही" उचेहरा का प्रसिद्ध पात्र

काष्ठ शिल्प — म.प्र की अति प्राचीन शिल्प
– कोरकू तथा भील आदिवासियों का महत्वपूर्ण योगदान है
– गाड़ी के पहिए, दरवाजे, मूर्तियाँ आदि

कंघी शिल्प — बंजारा जनजाति का व्यवसायिक शिल्प
– केन्द्र – नीमच, रतलाम, उज्जैन

छीपा शिल्प — हाथ द्वारा कपड़े पर छाप छीपा शिल्प कहलाती है।
– भील आदिवासियों द्वारा जनजातीय प्रतीकों का अंकन होता है।
– उज्जैन का छीपा शिल्प 'भैरूगढ़' के नाम से विश्वप्रसिद्ध है।

Scanned with CamScanner

वस्त्र शिल्प — म.प्र में वस्त्र शिल्प साड़ी कला के रूप में उत्कृष्टता प्राप्त है।
- चंदेरी साड़ी व महेश्वरी साड़ी सर्वोत्तम वस्त्र शिल्प है।
- ये साड़ियाँ सूती व रेशमी दोनों ही प्रकार के धागों से पक्के रंग में निर्मित की जाती है।

हस्तशिल्प — म.प्र. में दरी, कालीन, जूटशिल्प आदि हस्तशिल्प के तहत आते है।
- केन्द्र - जबलपुर, शहडोल, झाबुआ

बाँस शिल्प — झाबुआ व मंडला जिले के आदिवासियों द्वारा
- टोकरी तथा अन्य उपयोगी वस्तुएँ निर्मित की जाती है।

पत्थर शिल्प — पत्थरों पर नक्कारी
- मंदसौर तथा रतलाम की भील, गुर्जर, गायरी जनजातियों का प्रमुख शिल्प.

पत्ता शिल्प — पत्ता शिल्प के कारीगर मूल्य रूप से साड़ी निर्मित करते है।

Scanned with CamScanner

भीली शिल्प – मुख्यत: भील जनजाति की महिलाओं का लोकशिल्प
→ वस्तुएँ – बटुवा, मोतीमाला, थैलियाँ

लाख शिल्प – प्रदेश की खरवार जनजाति द्वारा चूड़े, कलात्मक खिलौने, श्रृंगार पेटियाँ आदि वस्तुओं का निर्माण

~~कठपुतली शिल्प – यह प्रदेश के लगभग सभी अंचलों में प्रचलित शिल्प है।~~

मध्यप्रदेश में लोकशिल्प की अप्रतिम विरासत विद्यमान है जो आज के समय में संरक्षण की मोहताज है। लोकशिल्प जनजातियों की आय में वृद्धि कर सकती है यदि उसे सही मंच प्रदान किया जाये।

म.प्र. में लोकशिल्प को अंतर्राष्ट्रीय ख्याति दिलाने के लिये राज्य स्तर पर ऑनलाइन पोर्टल जैसे मंचों को प्रस्तुत करना होगा जिससे वस्तुओं की खरीद-बिक्री के साथ ही हमारी सांस्कृतिक विरासत को एक नई पहचान मिल सके।

Scanned with CamScanner